उत्तर : पं० श्यामनारायण पाण्डेय द्वारा रचित **'तुमुल'** खण्डकाव्य का सम्पूर्ण कथानक पन्द्रह सर्गों में विभाजित है। प्रस्तुत खण्डकाव्य की कथा लक्ष्मण–मेघनाद युद्ध से सम्बन्धित है। खण्डकाव्य की कथा संक्षेप में सर्गानुसार इस प्रकार है—

प्रथम सर्ग (ईश-स्तवन)

कवि ने प्रस्तुत खण्डकाव्य के प्रथम सर्ग में ईश्वर की स्तुति की है और उसकी सर्वव्यापकता का वर्णन किया है। वस्तुत: यह सर्ग मंगलाचरण के रूप में ही प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय सर्ग (दशरथ-पुत्रों का जन्म एवं बाल्यकाल)

इस सर्ग में कवि ने राजा दशरथ के चारों पुत्रों के जन्म का वर्णन किया है। ये चारों पुत्र—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न—इक्ष्वाकु वंश की मर्यादा को बढ़ानेवाले हैं। बाल्यकाल में चारों पुत्र अपनी लीलाओं से राजमहल की शोभा को द्विगुणित करते रहते हैं। इक्ष्वाकु वंश के राजा दशरथ की यश–सुरभि भारतवर्ष के कोने–कोने में व्याप्त थी। कर्त्तव्यपरायणता, दानवीरता तथा युद्धविद्या में राजा दशरथ की कोई भी समता नहीं कर सकता था। युद्ध में महाराजा दशरथ सदैव विजयी होते थे। राजा दशरथ नीतिज्ञ, सच्चरित्र तथा सुख–शान्ति में विश्वास करनेवाले थे।

तृतीय सर्ग (मेघनाद)

कवि ने तृतीय सर्ग में मेघनाद के पराक्रम का वर्णन किया है। मेघनाद ने अपनी युवावस्था में इन्द्र के पुत्र जयन्त को भी पराजित किया था। धरती पर रहने वाले सभी राजा मेघनाद के नाम से कम्पित हो जाते थे। मेघनाद का तेज सूर्य के समान था।

चतुर्थ सर्ग (मकराक्ष-वध)

इस सर्ग में मकराक्ष के वध तथा रावण की चिन्ता का वर्णन किया गया है। श्रीरामचन्द्रजी के तीखे बाणों की मार से सारे राक्षस भागने लगे। रावण मकराक्ष को याद करके चिन्तामग्न हो गया। उसका मुख पीला पड़ गया तथा आँखों से अश्रुधारा बह निकली। मकराक्ष के वध के पश्चात् रावण ने मेघनाद को युद्ध-क्षेत्र में भेजने की योजना बनाई; क्योंकि रावण मेघनाद को भी अपने समान ही महाबली समझता है।

पंचम सर्ग (रावण का आदेश)

प्रस्तुत सर्ग में रावण द्वारा मेघनाद की अतुलित वीरता का वर्णन किया गया है। मेघनाद की अजेय शक्ति के सम्मुख वह मकराक्ष की मृत्यु को भी भूल गया है। रावण को अत्यधिक चिन्तित देखकर मेघनाद ने उसके चरणों का स्पर्श किया। रावण ने बड़ी कठिनता से मेघनाद के सम्मुख अपने मन की व्यथा इस प्रकार प्रकट की— "हे पुत्र! तुम्हारे होते हुए सम्पूर्ण राज्य में युद्ध के भय से हलचल मच गई है। हमें युद्ध से किसी भी प्रकार भयभीत नहीं होना है। राम से बदला न लेने में हमारी कायरता है, इसलिए मेरा आदेश है कि तुम युद्ध में लक्ष्मण को मृत्यु की गोद में सुला दो।" रावण ने मेघनाद के शौर्य की प्रशंसा करते हुए उसे युद्ध में लड़ने के लिए भेजा। रावण को पूरा विश्वास था कि मेघनाद मकराक्ष के वध का बदला लेगा और क्षणभर में शत्रुओं को परास्त भी कर देगा।

षष्ठ सर्ग (मेघनाद-प्रतिज्ञा)

मेघनाद के गर्जन से रावण का स्वर्ण-महल भी हिलने लगा। मेघनाद ने ज्यों-ज्यों गर्वोक्ति की, त्यों-त्यों रावण का वक्षस्थल गर्व से फूलने लगा। रावण के सम्मुख मेघनाद ने प्रतिज्ञा की, "हे पिता! मेरे होते हुए आप कभी शोक न करेंगे। यदि मैं आपका कष्ट हरण न कर सकूँ तो मैं कभी धनुष को हाथ नहीं लगाऊँगा। मैं राम के सम्मुख भी लड़ूँगा, और सभी के सिर काट दूँगा। लक्ष्मण की शक्ति के सम्मुख भी नहीं घबराऊँगा। मैं अधिक न कहकर केवल यह कहता हूँ कि संग्राम में मेरी अवश्य विजय होगी।" मेघनाद ने कहा, "यदि शत्रु आकाश में भी वास करने लगेंगे अथवा पाताल में जाकर भी छिपेंगे तो भी उनके प्राणों की रक्षा नहीं हो सकेगी। हे पिता! यदि मैं संग्राम में विजयी नहीं हुआ तो भविष्य में युद्ध का नाम भी नहीं लूँगा।"

सप्तम सर्ग (मेघनाद का अभियान)

मेघनाद रावण के सम्मुख प्रतिज्ञा करके जब युद्धक्षेत्र की ओर चलने लगा तो देवलोक के सभी देवता काँपने लगे। मेघनाद का मुख क्रोध से लाल हो गया। उसके हुंकार से बड़े-बड़े धैर्यशाली शूरवीरों का साहस छूटने लगा। बड़े-बड़े सेनापति मेघनाद के क्रोध का कारण पूछने लगे। मेघनाद ने युद्ध का रथ सजवाया तथा युद्ध के बाजे बजाने का आदेश दिया। इसके उपरान्त यज्ञ आदि करके तथा युद्ध के रथ पर बैठकर मेघनाद शत्रुओं से लोहा लेने चल पड़ा। मेघनाद की शक्ति का अनुमान करके देवता लोग विचार करने लगे कि मेघनाद के सम्मुख राम के प्राण अब कैसे बच सकेंगे? मेघनाद के युद्ध-कौशल के विषय में सभी कहते हैं कि जब वह बाणों की वर्षा करता है तो पृथ्वी भी काँप उठती है और सूर्य तथा चन्द्रमा भी अपने धैर्य को त्याग देते हैं।

अष्टम सर्ग (युद्धासन्न सौमित्र)

राम की आज्ञा लेकर लक्ष्मण भी युद्ध करने के लिए तैयार हो गए। युद्धातुर लक्ष्मण को देखकर हनुमान् आदि वीर भी युद्ध करने के लिए तत्पर हो गए। लक्ष्मण ने क्षणभर में ही मेघनाद के सम्मुख मोर्चा सँभाल लिया। दोनों वीरों में घमासान युद्ध

हुआ। दोनों वीरों में से कौन जीतेगा, इसका अनुमान नहीं किया जा सकता था। स्वयं लक्ष्मण ने भी मेघनाद की वीरता की प्रशंसा की। लक्ष्मण ने कहा कि तुझे अपने सामने देखकर युद्ध करने की इच्छा ही नहीं होती। मुझे यही चिन्ता है कि मैं अपने बाणों से तेरी छाती को छलनी कैसे बनाऊँ? मेघनाद ने लक्ष्मण की बात को ध्यानपूर्वक सुना। यद्यपि वह लक्ष्मण की ज्ञान की गरिमा को समझता है, तथापि उन्हें शत्रु समझकर उनकी मधुर वाणी के जाल में उलझना नहीं चाहता और युद्ध करने की ठानता है।

नवम सर्ग
(लक्ष्मण-मेघनाद द्वन्द्वयुद्ध तथा लक्ष्मण की मूर्च्छा)

मेघनाद ने लक्ष्मण से कहा कि जो तुमने कहा है मैं उसे सत्य ही मानता हूँ। तुम नीतिज्ञ तथा सर्वज्ञ हो। तुम्हारी दशा देखकर मैं भी तुमसे युद्ध करना नहीं चाहता, फिर भी मैं आज विवश हूँ क्योंकि मैं आज अपने पिता के सामने यह प्रतिज्ञा करके आया हूँ कि युद्ध में समस्त शत्रुओं का संहार करूँगा। तुम्हारी इच्छा लड़ने की हो या न हो, फिर भी तुम मेरी प्रतिज्ञा को सफल बनाने में मेरी सहायता करो। मैं बिना लड़े यहाँ से नहीं जाऊँगा, इसलिए युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। मेघनाद की चुनौती को सुनकर लक्ष्मण अत्यधिक कुपित हो गए। लक्ष्मण के क्रोध को देखकर सम्पूर्ण संसार थर्राने लगा। लक्ष्मण ने मेघनाद से कहा—"अरे अधम! मैंने तुझसे अपने मन का भाव न जाने क्यों कह दिया। यह सत्य है कि मधुर वाणी से दुष्टजन कभी नहीं सुधरते, जैसे दूध पीने पर सर्प अपना विष नहीं त्यागते।" लक्ष्मण ने कहा कि मैं युद्ध के लिए तैयार हूँ। इतना कहते ही लक्ष्मण मेघनाद पर बाणों से प्रहार करने लगे। लक्ष्मण के भीषण प्रहारों को देखकर शत्रु-सेना के पैर उखड़ गए। मेघनाद अपने सैनिकों के साहस को बढ़ाता रहा। मेघनाद ने अपने सैनिकों से कहा—"मेरे युद्ध-कौशल को भी देखो। मैं क्षण भर में इन शत्रुओं को परास्त कर दूँगा। मैंने पिता से जो प्रतिज्ञा की है, उसे पूरा करूँगा।" राक्षस सेना में फिर से साहस का संचार हुआ। मेघनाद ने भीषण युद्ध किया। मेघनाद तथा लक्ष्मण के भयंकर युद्ध को सभी सैनिक देख रहे थे। लक्ष्मण द्वारा छोड़े गए बाणों को मेघनाद ने नष्ट कर दिया। दोनों पराक्रमी वीर सिंह के समान लड़ रहे थे। दोनों का शरीर रक्त से लथपथ था। मेघनाद ने जब यह देखा कि उसके चलाए गए बाण से लक्ष्मण कुछ दुर्बल हो गए हैं तो उसने लक्ष्मण पर शक्ति चला दी। क्षण भर में ही लक्ष्मण मूर्च्छित हो गए। धरती पर मूर्च्छित पड़े हुए लक्ष्मण को देखकर मेघनाद सिंह-गर्जना करके विजय के गर्व में उन्मत्त होकर लंका की ओर चला गया।

दशम सर्ग (हनुमान् द्वारा उपदेश)

लक्ष्मण के मूर्च्छित हो जाने पर वानर सेना अत्यधिक व्याकुल हो गई। उस समय हनुमान्जी सबको उपदेश देने लगे। हनुमान्जी कहते हैं कि इस समय अधिक चिन्ता मत करो। हमारी आस्था भगवान् राम में है। जिसके रक्षक राम हैं, उसका संसार में कुछ नहीं बिगड़ सकता। तुम्हारी व्याकुल दशा को देखकर शत्रु तुम्हारा उपहास करेगा। हनुमान्जी के उपदेश का सभी पर प्रभाव पड़ा और वे भी शोकरहित हो गए। राम अपनी कुटी में बैठे हुए थे। अकस्मात् ही उनका मन कुछ चिन्तित-सा होने लगा।

एकादश सर्ग (उन्मत्त राम)

राम ने सोचा कि आज व्यर्थ ही मन में व्यथा क्यों जन्म ले रही है? मैंने ऐसा कौन-सा पाप किया है जो मेरा मन सशंकित है और मेरे पैर काँप रहे हैं। उसी समय अंगद, हनुमान्, सुग्रीव आदि मूर्च्छित लक्ष्मण को लिए राम के पास आए। लक्ष्मण की दशा देखकर राम के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी।

द्वादश सर्ग(राम विलाप और सौमित्र का उपचार)

राम अपने छोटे भाई लक्ष्मण से अत्यधिक स्नेह करते हैं, यही कारण है कि वे लक्ष्मण की दशा को देखकर विलाप करने लगते हैं। उन्होंने कहा—"हे लक्ष्मण! तुम्हारी इस दशा से मैं अत्यन्त दुःखी हूँ। हे धनुर्धर! तुम धनुष हाथ में लेकर फिर उठो। मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकता। एक बार तुम अपने नेत्रों को अवश्य खोलो।" राम की कारुणिक दशा को देखकर जाम्बवान् ने हनुमान्‌जी को वैद्य के पास जाने का आदेश दिया। हनुमान्‌जी क्षण भर में सुषेण वैद्य को वहाँ ले आए। सुषेण वैद्य ने कहा कि संजीवनी बूटी के बिना लक्ष्मण की चिकित्सा नहीं हो सकती। इस बूटी को लाने के लिए भी हनुमान्‌जी ने ही प्रस्थान किया। संजीवनी बूटी की पहचान न होने से हनुमान्‌जी पूरे पर्वत को ही उखाड़कर ले आए। संजीवनी बूटी के उपयोग से लक्ष्मण की मूर्च्छा टूट गई और वानर सेना में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

त्रयोदश सर्ग (विभीषण की मन्त्रणा)

राम–लक्ष्मण के साथ रीछ व वानर भी बैठे हुए थे, तभी रामभक्त विभीषण ने यह सूचना दी कि मेघनाद यज्ञ में तल्लीन है। यदि उसका यज्ञ पूरा हो गया तो किसी प्रकार भी राम की जीत नहीं हो सकती। इसलिए लक्ष्मण को, यज्ञ करते हुए मेघनाद पर तुरन्त आक्रमण कर देना चाहिए। विभीषण की बात मानकर राम ने अपनी सेना को आक्रमण करने का आदेश दिया। राम के चरण–स्पर्श करके लक्ष्मण ने युद्ध में मेघनाद का वध करने की प्रतिज्ञा ली।

चतुर्दश सर्ग (मख-विध्वंस और मेघनाद-वध)

लक्ष्मण अपने दल-बल के साथ उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ मेघनाद यज्ञ कर रहा था। लक्ष्मण ने मेघनाद पर बाणों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। मेघनाद के शरीर से इतना रक्त बहा कि यज्ञ की अग्नि भी बुझने लगी। रीछ और वानरों के हाथों से यज्ञ के पुरोहित, यजमान आदि सभी मारे गए, केवल मेघनाद ही शेष रह गया। लक्ष्मण को बाणों की वर्षा करते देखकर मेघनाद क्रोध से कहने लगा कि इस प्रकार छल-कपट से युद्ध करना वीरता का लक्षण नहीं है। मेरे सामने एक बार युद्ध में पराजित होने पर तुमने जो यह घृणित कार्य किया है, यह सर्वथा निन्दनीय है। मेघनाद ने लक्ष्मण से कहा कि तुम्हारी इस जीत में भी हार है। इससे रघुवंश पर जो कलंक लगा है, उसे कभी नहीं धोया जा सकता। मेघनाद की बात सुनकर लक्ष्मण थोड़ी देर के लिए रुक गए, परन्तु विभीषण के संकेत पर पुनः मेघनाद पर बाणों की वर्षा करने लगे। लक्ष्मण के आक्रमणों से मेघनाद यज्ञ-भूमि में ही मारा गया। मेघनाद के मारे जाने पर देवता भी स्वर्गलोक से पुष्पों की वर्षा करने लगे।

पंचदश सर्ग (राम की वन्दना)

मेघनाद के शव को यज्ञ-भूमि में ही छोड़कर वानर सेना राम की ओर चली। विभीषण ने युद्ध में लक्ष्मण की विजय का समाचार राम को दिया। राम ने युद्ध में लक्ष्मण की विजय पर उनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि मैं जानता था कि केवल लक्ष्मण ही मेघनाद को पराजित कर सकते हैं। लक्ष्मण अपनी प्रशंसा सुनकर श्रीराम के चरणों में नतमस्तक हो गए और भावविभोर होकर कृपानिधान व सर्वशक्तिमान् श्रीराम की वन्दना करने लगे।